आज़ादी का अमृत महोत्सव

जन समर्थन से सारस संरक्षण

भोज ताल में सारस संरक्षण के सफलतम 10 वर्ष

स्मारिका

वर्ष 2012 - 2021

BHOPAL BIRDS
Committed to save nature

भोपाल बर्ड्स कंज़र्वेशन सोसाइटी, भोपाल (म.प्र)

मां निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यतक्रोंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम् ।।

जन समर्थन से सारस संरक्षण

भोज ताल में सारस संरक्षण के सफलतम 10 वर्ष

स्मारिका

वर्ष 2012–2021

लेखक :
डॉ. संगीता राजगीर
श्री मो.खालिक

कवर एवं बेक पेज फोटोग्राफ्स :
श्री क्षितिज पटले

अन्य फोटोग्राफ्स :
श्री क्षितिज पटले एवं भोपाल बर्ड्स

जैकेट पेज चित्रकला :
सुश्री नसरीन बानो

संपर्क :
भोपाल बर्ड्स कंज़र्वेशन सोसाइटी
30, सलेहा परिसर फेज –2
नरेला , भोपाल –462021
ई–मेल :bhopalbirds@yahoo.com
फ़ोन : +91–8319324353
+91–9303115519
वेबसाइट :www.bhopalbird.org

BHOPAL BIRDS
Committed to save nature

निशुल्क वितरण के लिए

क्र.स.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1	सारस पक्षी एक परिचय	1-5
2	कैसे हुई सारस संरक्षण की शुरुआत	6-15
3	राष्ट्रीय –अंतर्राष्ट्रीय पहचान	16-18
4	यह हैं सारस संरक्षण के नायक सारस मित्र	19-20
5	सारस संरक्षण में शैक्षणिक संस्थाओं का योगदान	21
6	भविष्य की रणनीति	22
7	सारस संरक्षण अभियान के कुछ यादगार पल	23-29
8	सारस मित्र अभियान ख़बरों में	30-31

मो.खालिक
संस्थापक
भोपाल बड्र्स कंज़र्वेशन सोसाइटी
भोपाल

आभार

भोज ताल में सारस संरक्षण अभियान के 10 सफलतम वर्ष पूर्ण होने पर स्मारिका आपके समक्ष सहर्ष प्रस्तुत है। इन दस वर्षों में हमने अभियान के दौरान कई उतार–चढ़ाव देखे पर संस्था के सभी सदस्यों तथा सारस मित्रों की दृढ़ इच्छाशक्ति के परिणाम स्वरुप आज यह अभियान अपने दस वर्ष पूर्ण कर पाया है। सर्वप्रथम इस अभियान को सफल बनाने हेतु हम अपनी सहयोगी संस्थाओं मध्य प्रदेश वन विभाग, वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया, स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय–भोपाल, मध्य प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड तथा व्ही एन एस ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूट को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने इस अभियान हेतु हमें सहयोग प्रदान किया।

हम गौरवान्वित हैं की भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री राम नाथ कोविंद जी द्वारा अपना अमूल्य समय प्रदान कर अभियान की सफलता हेतु अपना आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन दिया।

हम कृतज्ञ हैं कि उत्तरप्रदेश कि राज्यपाल महामहिम श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी द्वारा अपना अमूल्य समय प्रदान कर समय–समय पर अभियान की पाठ्य सामग्री का विमोचन किया तथा हमें अभियान हेतु मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद दिया।

हम अभिभूत हैं कि मध्य प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री मंगू भाई पटेल जी द्वारा अपना अमूल्य समय प्रदान कर अभियान की सफलता हेतु आशीर्वाद एवं बधाई दी।

हम आभारी हैं डॉ कुँवर विजय शाह जी माननीय वन मंत्री, मध्य प्रदेश शासन के जिन्होंने अपना अमूल्य समय प्रदान कर अभियान पर चर्चा की एवं अपना मार्गदर्शन दिया।

हम आभार व्यक्त करते हैं मध्य प्रदेश वन विभाग के जिसने समय–समय पर अभियान में अपना सहयोग दिया। इन दस वर्षों में विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त होता रहा है। हम आभारी हैं श्री रमेश कुमार गुप्ता (वन बल प्रमुख एवं प्रधान मुख्य वन संरक्षक,म.प्र वन विभाग), श्री आलोक कुमार (प्रधान मुख्य वन संरक्षक–वन्य प्राणी, म.प्र वन विभाग), श्री जसबीर सिंह चौहान (प्रधान मुख्य वन संरक्षक,म.प्र वन विभाग), श्री सत्यानंद (अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी मध्य प्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड, म.प्र वन विभाग),डॉ. समीता राजोरा (अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक,म.प्र वन विभाग) डॉ. संजय शुक्ला (अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक,म.प्र वन विभाग), श्री शुभरंजन सेन (अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र वन विभाग), श्री श्रीनिवास मूर्ति (सेवानिवृत्त अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र वन विभाग), श्री अशोक कुमार जैन (सहायक संचालक, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान) एवं श्री रजनीश सिंह (उप वन संरक्षक,म.प्र वन विभाग) के जिन्होंने अभियान में समय–समय पर सहयोग प्रदान किया।

हम हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करते हैं स्वर्गीय श्री एन.डी शर्मा (वन अधिकारी) का जिन्होंने सारस के बच्चे को रेस्क्यू कर वर्ष 2013 में प्रथम बार हमारे साथ ग्रामीणों से सारस संरक्षण हेतु चर्चा की। आज आपकी स्मृति अविस्मरणीय है।

हम आभारी हैं डॉ. मनोज कुमार शर्मा (प्रभारी वैज्ञानिक, क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय–भोपाल) के जिन्होंने इन दस वर्षों में हमारे सभी जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लिया तथा ग्रामीणों को जैविक खेती करने हेतु प्रेरित करने का सफलतम प्रयास किया।

हम आभारी हैं हमारे स्त्रोत व्यक्तियों डॉ. प्रदीप नंदी (निदेशक,एन.सी.एच.सी.ई),श्री ए.के खरे (सेवानिवृत वन अधिकारी),डॉ सुदेश वाघमारे (सेवानिवृत वन अधिकारी), श्री दिलशेर खान (पक्षी विशेषज्ञ),डॉ.विपिन व्यास (सह–प्राध्यापक,बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय,भोपाल),श्री मानिक लाल गुप्ता (वैज्ञानिक–सी,क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय–भोपाल), श्री अशोक बिशवाल (विशेषज्ञ–जलीय वनस्पति) के जिन्होंने हमारे जागरूकता कार्यक्रमों में उपस्थित होकर जन सामान्य का ज्ञान वर्धन किया।

हम विशेष आभारी हैं डॉ विवेक मेनन (संस्थापक, वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया) तथा उनकी पूरी टीम के जिन्होंने इन 10 वर्षों में हमें पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

हम आभार व्यक्त करते हैं डॉ. डी.के स्वामी (ग्रुप डायरेक्टर,वी.एन.एस इंस्टिट्यूट) एवं उनकी सम्पूर्ण टीम का जिन्होंने भोज ताल के निकट स्थित अपनी शैक्षणिक संस्था में नेचर क्लब की स्थापना कर आस पास के ग्रामीणों को भोज ताल के जैवविविधता संरक्षण हेतु जागरूक किया।

हम हृदय से आभारी हैं भोज ताल के निकट स्थित समस्त ग्रामवासियों के जिन्होंने सारस मित्र बनकर सारस संरक्षण हेतु अभूतपूर्व कार्य किये एवं सारस की सतत् निगरानी कर सँख्या को बढ़ाने का प्रयास किया।

मैं भोपाल बर्ड्स संस्था की संस्थापक डॉ.संगीता राजगीर एवं संस्था के अन्य सहयोगियों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने इस अभियान हेतु सदैव अपना सहयोग प्रदान किया।

हम आभारी हैं उन सभी पत्रकारों तथा मीडिया बन्धुओं के जिन्होंने अपनी खबर के माध्यम से इस अभियान को राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहचान दिलाई।

हम आभारी हैं उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के जिन्होंने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से इस अभियान से जुड़कर इसको सफल बनाया।

हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी यह अभियान आप सभी के सहयोग से नई उँचाइयाँ प्राप्त करेगा एवं पक्षी संरक्षण के क्षेत्र में नया इतिहास रचेगा।

धन्यवाद

(मो.खालिक)

डॉ. संगीता राजगीर
संस्थापक
भोपाल बर्ड्स कंज़र्वेशन सोसाइटी
भोपाल

प्रस्तावना

पक्षी प्रकृति चक्र के महत्वपूर्ण अंग है तथा विभिन्न पारिस्थितिकीय तंत्रों में इनका विशिष्ट योगदान है। जलाशयों पर निरंतर बढ़ते दबाव से उनका अस्तित्व खत्म होता जा रहा है और वह प्रदूषण, दोहन, मानव विकास की गतिविधियों जैसी समस्याओं से जूझ रहे है। जलाशय हमारे लिए जीवनदायी घटक है जिनका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। जलाशय संरक्षण हेतु अत्यंत आवश्यक है कि हम जलाशय के पारिस्थितिकीय तंत्र के विभिन्न घटकों विशेषकर उच्च उपभोक्ता का भी संरक्षण करें। सारस जलाशयों के उच्च उपभोक्ताओं में से एक है। भोजवेटलैंड तथा सारस पक्षियों से मेरा परिचय पक्षियों पर शोध (पी.एच.डी.) के दौरान हुआ। जहाँ बाद में भोपाल बर्ड्स संस्था के साथ विभिन्न पक्षी दर्शन कार्यक्रमों के दौरान इन्हें अक्सर देखा गया जो केवल एक या दो जोड़ों में दिखाई देते थे। इनके आकर्षक व भव्य रूप ने इनके प्रति जानने की जिज्ञासा को और बढ़ाया तब भोज वेटलैंड के समीप स्थित खेतों में इनकी उपस्थिति दिखी। ग्रामवासियों से और अधिक जानने और भोजवैटलैंड पर विभिन्न शोध पत्रों से पता चला कि एक दशक पहले इनकी संख्या काफी अच्छी थी । सारसों की घटती संख्या व भोजवेटलैंड पर बढ़ते दबाव को देखकर भोपाल बर्डस संस्था ने इसके विभिन्न पहलुओं पर कार्य शुरू किया जिसके प्रमुख मददगार थे वे ग्रामवासी जिनके घर, खेत भोजवैटलैंड के निकट स्थित थे। संस्था के सदस्यों द्वारा ग्रामवासियों के लिए सारस हेतु विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये जिसमें वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया संस्था द्वारा सहयोग प्रदान किया गया। इन जागरूकता कार्यक्रमों से प्रेरित होकर ग्रामवासी सारस मित्र के रूप में इस क्षेत्र के सारसों के लिए संकटमोचक के रूप में उभर कर आये । इस स्मारिका में इन सारस मित्रों के अथक प्रयास अमूल्य योगदान का वर्णन है। इस पुस्तिका को लिखने का उद्देश्य आमजन में सारस व जलाशय संरक्षण के प्रति जागरुकता लाना है तथा अब तक म.प्र. की एकमात्र रामसर

क्षेत्र (भोज वेटलैंड) में पाए जाने वाले सारस पक्षियों (विश्वस्तर पर संकटग्रस्त) के संरक्षण व संवर्धन हेतु स्थानीय लोगों द्वारा किये गए प्रयासों को विश्वस्तर पर प्रस्तुत करना है। इस पुस्तिका में स्थानीय लोगों द्वारा अपने आस–पास पायी जाने वाली जैवविविधता के प्रति समझ, संवेदनशीलता व अभूतपूर्व प्रयासों को विस्तृत रूप से दर्शाया गया है। जो इस प्रकार के अन्य क्षेत्रों के लिए अनुकरणीय सिद्ध हो सकता है साथ ही इस क्षेत्र में सारस संरक्षण के लिए विभिन्न संस्थाओं के सहयोग व स्थानीय समुदाय के साथ सम्मिलित प्रयासों को भी प्रदर्शित करता है। इस पुस्तिका के माध्यम से जलाशय पारिस्थिकीय तंत्र के महत्वपूर्ण घटकों को संरक्षित कर विश्वस्तरीय जैवविविधता समृद्ध क्षेत्र भोजवेटलैंड के संरक्षण की अभूतपूर्व यात्रा को प्रदर्शित किया गया है।

आशा है यह पुस्तिका उन सभी जलाशयों जो जैवविविधता की दृष्टि से समृद्ध हैं के संरक्षण व सारस पक्षी के संवर्धन हेतु दूरगामी योजना बनाने में उपयोगी सिद्ध होगी।

(डॉ. संगीता राजगीर)

MANGUBHAI PATEL
GOVERNOR, MADHYA PRADESH
BHOPAL - 462052

मंगुभाई पटेल
राज्यपाल, मध्यप्रदेश
भोपाल - 462052

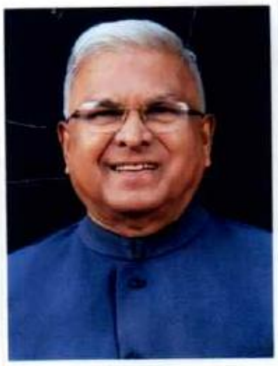

क्रमांक 713 /राजभवन/2021
भोपाल, दिनांक-24 नवम्बर, 2021

संदेश

हर्ष का विषय है कि सारस संरक्षण अभियान के 10 वर्ष पूर्ण होने पर भोपाल बर्डस कंजर्वेशन सोसायटी स्मारिका का प्रकाशन कर रही है।

सारस की उपस्थिति क्षेत्र की स्वस्थ परिस्थितिकी का संकेत होती है। सारस वनस्पति युक्त जलीय एवं दलदली क्षेत्र के आवश्यक जल शोधक के रूप में भी कार्य करते हैं। इससे उन जलीय क्षेत्रों का भी संरक्षण होता है, जिन पर विभिन्न जलीय पौधे एवं जीव पनपते हैं। पर्यावरण संतुलन सूचक सारस का संरक्षण वस्तुतः पर्यावरण का संरक्षण है।

आशा है, भोज वेटलैंड में सारस संरक्षण प्रयासों के प्रति जन जागृति को और अधिक बढ़ाने में स्मारिका सफल होगी।

शुभकामनाएं,

मंगुभाई पटेल

(मंगुभाई पटेल)

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ - 226 027

7 दिसम्बर, 2021

सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भोपाल बर्डस कंजर्वेशन सोसाइटी, भोपाल द्वारा पिछले 10 वर्षो से सारस जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में संस्था द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन जीवन के लिये बहुत आवश्यक है। मनुष्य के सुखद जीवन की कल्पना इसके बिना संभव नहीं है। लुप्त प्राय जानवरों, पक्षियों एवं पेड़–पौधों को संरक्षित कर हम न केवल अपने वर्तमान को सुरक्षित करेंगे बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी एक खुशहाल एवं स्वस्थ वातावरण देंगे। संस्था द्वारा 'सारस' पक्षी के संरक्षण हेतु किया जा रहा कार्य सराहनीय है।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन
(आनंदीबेन पटेल)

रमेश कुमार गुप्ता, भा.व.से
प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं
वन बल प्रमुख, मध्य प्रदेश

संदेश

मध्य प्रदेश जैवविविधता की दृष्टि से परिपूर्ण प्रदेश है यहाँ के राष्ट्रीय उद्यान तथा अभयारण्य भिन्न–भिन्न प्रकार के वन्यप्राणियों का निवास स्थल है। प्रदेश में कई जलीय क्षेत्र भी पक्षियों के लिए महत्वपूर्ण हैं इसमें से भोपाल का भोज ताल पक्षी विविधता में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यह रामसर क्षेत्र होने के साथ–साथ इम्पोर्टेन्ट बर्ड एरिया भी है। भोज वेटलैंड क्षेत्र में लगभग 250 पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिनमे 80 से 100 प्रजातियाँ प्रवास कर आती हैं। इन पक्षी प्रजातियों का इतनी बड़ी संख्या में यहाँ आना इस क्षेत्र के लिए किसी उपलब्धि से कम नहीं है। इन प्रजातियों में कई संकटग्रस्त प्रजातियाँ भी इस क्षेत्र में निवास करती हैं जिसमें सारस पक्षी भी शामिल है। यह पक्षी विश्व के सबसे बड़े उड़ने वाले पक्षी हैं जो पक्षी प्रेमियों तथा शोधकर्ताओं को हमेशा अपनी ओर आकर्षित करता है। भोपाल बर्ड्स कंज़र्वेशन सोसायटी द्वारा पिछले 10 वर्षों से भोज वेटलैंड क्षेत्र में सारस संरक्षण एवं संवर्धन का जो कार्य स्थानीय समुदाय के साथ मिल कर किया जा रहा है वह सराहनीय है। स्थानीय समुदाय के युवाओं द्वारा सारस मित्र बनकर सारस की सतत् निगरानी करना तथा उनकी जनसँख्या को बढ़ाने के प्रयासों के फलस्वरूप आज भोज ताल में इस पक्षी की संख्या में लगातार वृद्धि देखी जा रही है।

ग्रामवासियों द्वारा अपनी कृषि भूमि पर सारस केंद्रों का निर्माण तथा अपने घर की दीवारों पर भोज ताल की स्वच्छता पर सन्देश लिखने जैसे अभिनव प्रयोग इस अभियान को और सफल बनाने में कारगर साबित हुए हैं। भोपाल बर्ड्स संस्था इस वर्ष सारस संरक्षण अभियान के 10 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्मारिका का प्रकाशन कर रही है। मैं सारस संरक्षण अभियान की सफलता एवं स्मारिका के प्रकाशन हेतु वन विभाग की ओर से संस्था को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह अभियान निरंतर जारी रहकर सारस संरक्षण के अपने उदेश्य में और अधिक सफलता प्राप्त करेगा।

Ramesh

(रमेश कुमार गुप्ता)

अलोक कुमार, भा.व.से
प्रधान मुख्य वन संरक्षक (व.प्र)
एवं मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक
मध्य प्रदेश
भोपाल

संदेश

भोजताल भोपाल में सारस संरक्षण अभियान के सफलतम दस वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर भोपाल बर्डस् कर्जवेशन सोसाइटी को बहुत-बहुत बधाई। आपकी संस्था विगत 10 वर्षो से भोजताल के निकट के सभी गांवों में स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर सारस संरक्षण पर कार्य कर रही है जिससे स्थानीय समुदाय व आमजन में भी सारस संरक्षण के प्रति जनचेतना जागृत हो रही है। सारस एक संकटग्रस्त प्रजाति है जिसका संरक्षण एवं संवर्धन आवश्यक है। विगत कुछ वर्षो से मानवीय हस्तक्षेप के कारण पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। दिनोंदिन बढ़ती आबादी की आवश्यकताओं की पूर्ति व विकास के परिणाम स्वरूप प्राकृतिक पारिस्थतिकीय तन्त्र पर दबाव बढ़ता जा रहा है जिसके फलस्वरूप सारस पक्षी की संख्या में भी उत्तरोत्तर कमी आई है। जनसमर्थन के प्रयासों से ही हमारा प्रदेश जैव-विविधता की समृद्ध विरासत का दीर्घकालीन संरक्षण कर सकेगा। व्यापक जनसमर्थन से ही सारस संरक्षण संभव है। इस हेतु जनचेतना को विकसित करना आवश्यक है तथा आपकी संस्था इस ओर विशेष रूप से उल्लेखनीय कार्य कर रही है। आपकी संस्था विगत 10 वर्षो से प्रतिवर्ष सारस जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करती है। इसी कार्य के फलस्वरूप आज भोजताल के आसपास सारस पक्षियों की आबादी लगभग 300 तक पहुंची है। मुझे पूर्ण आशा है कि भविष्य में भी आपका सारस पक्षी के संरक्षण में निरंतर सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहेगा व आप सारस पक्षी संरक्षण कार्यक्रम को और अधिक विस्तारित कर और अधिक जनसमावेशी बनायेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

25/10/2021

आलोक कुमार
प्रधान मुख्य वन संरक्षक (व.प्र.)
एवं मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक
मध्यप्रदेश, भोपाल

सत्यानंद, भा.व.से
मुख्य कार्यपालन अधिकारी
मध्य प्रदेश इकोपर्यटन विकास बोर्ड
एवं अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(वन्य प्राणी संरक्षण)

संदेश

भोपाल बर्ड्स कंजर्वेशन सोसाइटी द्वारा विगत कई वर्षो से जन-सामान्य में वन एवं वन्यप्राणियों के संरक्षण के प्रति चेतना विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। संस्था द्वारा निरंतर स्थानीय ग्रामीणों से संवाद कायम कर उन्हें सारस पक्षी के संरक्षण हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है एवं सारस पक्षी के रहवास स्थलों का विकास एवं संवर्धन का अत्यंत सराहनीय कार्य किया जा रहा है। इसके सकारात्मक परिणाम प्रतिवर्ष भोपाल प्रवास करने वाले सारस पक्षी की बढ़ी हुई संख्या के रूप में परिलक्षित है। अत्यंत हर्ष का विषय है कि भोज ताल, भोपाल में सारस अभियान के सफलतम 10 वर्ष पूर्ण हुए हैं। इस उपलक्ष्य में प्रकाशित की जा रही स्मारिका के सफल प्रकाशन एवं आपकी संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु अनेकानेक शुभकामनाएं।

आशा है कि भोपाल बर्ड्स कंजर्वेशन सोसाइटी द्वारा वनों एवं वन्यप्राणियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया जाता रहेगा।

(सत्यानंद) भा.व.से.
मुख्य कार्यपालन अधिकारी
म.प्र. ईकोपर्यटन विकास बोर्ड
एवं अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(वन्यप्राणी संरक्षण)

डॉ. समीता राजोरा, भा.व.से
अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(सतर्कता/शिकायत) मध्य प्रदेश, भोपाल

संदेश

भोपाल बर्डस और उनके सहयोगी सारस मित्रों एवं भोपाल के स्थानीय समुदाय ने सारस पक्षियों के संरक्षण का एक उत्कृष्ट एवं सफल उदाहरण प्रस्तुत किया है। भोपाल बर्डस के मार्गदर्शन में बिशनखेड़ी, गोरागांव एंव अन्य ग्रामीणों ने जैविक खेती अपनाकर आपसी सामंजस्य बनाकर एवं जागरूक रहकर सारस पक्षी की आवश्यकताओं को समझा और उनके संरक्षण एवं संवर्धन में भागी बने।

सारस पक्षियों ने भी ग्रामीणों के प्रयासों को सम्मान देते हुये भोज वेटलेण्ड के क्षेत्रों को अपने लिये सुरक्षित रहवास के रूप में अपनाकर अपनी संख्या में 24 से 300 से अधिक की वृद्धि दर्शाई। इसका पूर्ण श्रेय संगीता राजगीर और मोहम्मद खालिक की अथाह मेहनत, पक्षी प्रेम, जुनून और स्थानीय समुदाय की समझदारी और साझेदारी को जाता है।

मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे संचालक, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान एवं जू रहते हुये इस प्रक्रिया का साक्षी बनने के मौके मिले। भोपाल बर्डस एवं स्थानीय समुदाय का यह सराहनीय प्रयास सतत् प्रगति करता रहे और दूसरों के लिये भी जीव संरक्षण एवं सर्वधन का प्रेरणा स्त्रोत बने, ऐसी मेरी कामना है।

भोपाल बर्डस एवं उनके सहयोगियों को सारस संरक्षण अभियान के सफल दस वर्ष पूर्ण होने पर बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनायें।

Keeta

(डॉ. समीता राजोरा)

डॉ. संजय शुक्ला, भा.व.से
अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
सूचना तकनीकी,
भोपाल

संदेश

सारस विश्व के सबसे बड़े आकार के उड़नशील पक्षी हैं। अपने आकर्षक रूप व जीवन भर एक ही जोड़े में रहने की प्रवृति के कारण इनका भारतीय संस्कृति में विशिष्ट स्थान है। यह जलाशयों एवं कृषि भूमियों के पारिस्थितिकी तंत्रों के महत्वपूर्ण अंग हैं। किसी जलाशय में इनकी उपस्थिति उसके स्वस्थ होने का परिचायक है। विश्व स्तर पर संकट ग्रस्त यह पक्षी मध्य प्रदेश के एकमात्र रामसर क्षेत्र भोजताल में भी पाए जाते हैं। पिछले एक दशक पूर्व भोजताल में इनकी घटती संख्या को देखकर यहाँ के स्थानीय लोगों एवं भोपाल बर्ड्स संस्था द्वारा इनके संरक्षण हेतु प्रयास शुरू किये गए। इन वर्षो में इन लोगों द्वारा सारस के आवास एवं नीडन क्षेत्रों की सुरक्षा की गई एवं इनके संकट के कारणों को कम करने का प्रयास किया गया जिसके परिणाम स्वरूप भोजताल के क्षेत्र में सारसों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। सारस संरक्षण हेतु चलाया गया यह सारस मित्र अभियान न केवल लोगों को जागरूक कर रहा है बल्कि अपने अनूठे प्रयास की वजह से देश विदेश में भी पहचाना गया है। विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मुझे सारस मित्र अभियान को जानने व सारस मित्रों से मिलने का अवसर मिला है। यहाँ के स्थानीय लोगों की मजबूत इच्छा शक्ति व भोपाल बर्ड्स द्वारा सारस संरक्षण हेतु किया गये प्रयास प्रशंसनीय है।

(डॉ. संजय शुक्ला)

डॉ.मनोज कुमार शर्मा
प्रभारी वैज्ञानिक
क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, भोपाल
पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
भारत सरकार

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि भोपाल बर्ड्स, भोपाल द्वारा सारस संरक्षण पर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। पक्षी हमारे पर्यावरण का अभिन्न हिस्सा हैं। आज पक्षियों व वन्य प्राणियों को संरक्षित रखना पूरे विश्व के लिए अनिवार्य है। इनका संरक्षण भारतीय परंपरा का अभिन्न हिस्सा रहा है। आज पक्षियों के प्राकृतिक रहवासों में कमी, अवैध शिकार एवं प्रदूषण के कारण लुप्त हो रही प्रजातियां हमें चिंतित कर रही हैं और समय रहते सचेत होने का संकेत भी दे रही हैं। भोपाल बर्ड्स, भोपाल द्वारा किए गए जागरूकता कार्यक्रमों के फलस्वरूप भोजताल के आस-पास लगभग 300 सारस पक्षियों का पाया जाना शुभ संकेत देता हैं।

विश्व की समृद्धि और वसुंधरा के अस्तित्व के लिए पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी का परम कर्तव्य है। आइए हम सब एकजुट होकर पक्षियों एवं समस्त वन्यजीवों के प्राकृतिक रहवासों को संरक्षित करने का प्रण लें।

स्मारिका के उद्देश्यों की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(डॉ.मनोज कुमार शर्मा)
वैज्ञानिक–सी एवं कार्यालय अध्यक्ष

डॉ.प्रदीप नंदी
महानिदेशक
नेशनल सेंटर फॉर ह्यूमन सेटेलमेंट एंड एनवायरनमेंट
भोपाल

संदेश

भोज ताल अपने आप में पक्षियों के लिए समृद्ध क्षेत्र है। यह तालाब केवल भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। भोज ताल को 19 अगस्त 2002 को रामसर क्षेत्र का दर्जा दिया गया था। इस क्षेत्र में पक्षियों की कई संकटग्रस्त प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं जिसमे से सारस पक्षी भी है।

भोपाल बर्ड्स द्वारा भोज ताल में सारस पक्षियों के लिए किया जा रहा सारस संरक्षण का कार्य प्रशंसनीय है। मुझे भी कई बार इस कार्यक्रम के अंतर्गत सारस मित्रों के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होता रहा है। सारस मित्रों की रुचि न केवल सारस बल्कि सभी पक्षियों हेतु देखते ही बनती है। वह अपनी दैनिक दिनचर्या के साथ साथ इन पक्षियों का संरक्षण एवं संवर्धन करते आ रहे हैं। आज सभी भोपाल वासियों की प्राथमिकता होनी चाहिए की हम सब मिलकर भोज ताल को संरक्षित करें एवं इसमें पाई जाने वाली जैवविविधता को संरक्षित करने का कार्य करें।

मैं भोपाल बर्ड्स को भोज ताल में सारस संरक्षण के 10 वर्ष पूर्ण होने पर स्मारिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ की संस्था सारस संरक्षण के इस प्रयास को निरन्तर जारी रखेगी।

डॉ प्रदीप नंदी
महानिदेशक

डॉ धीरेंद्र कुमार स्वामी
समूह निदेशक,
वी एन एस ग्रुप आफ कॉलेजेस,
भोपाल

संदेश

बड़े हर्ष का विषय है कि भोपाल बड्र्स, सारस संरक्षण से संबंधित स्मारिका का प्रकाशन कर रहा है, इस हेतु हमारी बधाई स्वीकारें ।

विलक्षण पक्षी सारस के संरक्षण में आपकी संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों का पिछले कुछ वर्षों से मैं भी साक्षी हूं। आपके द्वारा जिस प्रकार स्थानीय ग्राम वासियों को सारस संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया उसके परिणाम स्वरूप भोज ताल के आसपास सारस की लगातार बढ़ती संख्या हमारे सामने है।

आपकी संस्था से जुड़कर वी.एन.एस. ग्रुप के विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों को भी सारस संरक्षण के कार्य में योगदान देने का अवसर प्राप्त हुआ। आप से जुड़कर हमारे विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों में न केवल पक्षियों के प्रति जागरूकता आई है अपितु उनमें से कुछ विशेषज्ञता की ओर भी बढ़ रहे हैं।

भोपाल की सुंदर प्राकृतिक भौगोलिक स्थिति देश विदेश से पक्षियों को आकृष्ट करती है। पक्षियों का संरक्षण एवं आमजन में पक्षियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में आपका कार्य सराहनीय है।

शुभकामनाओं के साथ

डॉ धीरेंद्र कुमार स्वामी

सारस पक्षी-एक परिचय

सारस विश्व का सबसे विशाल उड़ने वाला पक्षी है। पूरे विश्व में इस पक्षी की सबसे अधिक संख्या भारतवर्ष में पाई जाती है। सबसे बड़ा पक्षी होने के अतिरिक्त इस पक्षी की कुछ अन्य विशेषताएं इसे विशेष महत्व देती हैं। उत्तर प्रदेश के इस राजकीय पक्षी को मुख्यतः गंगा के मैदानी भागों और भारत के उत्तरी और उत्तर पूर्वी और इसी प्रकार के समान जलवायु वाले अन्य भागों में देखा जा सकता है। भारत में पाए जाने वाला सारस पक्षी यहां के स्थाई प्रवासी होते हैं और एक ही भौगोलिक क्षेत्र में रहना पसंद करते हैं। सारस पक्षी का अपना विशिष्ट सांस्कृतिक महत्व भी है। विश्व के प्रथम ग्रंथ रामायण की प्रथम कविता का श्रेय सारस पक्षी को जाता है। रामायण का आरंभ एक प्रणयरत सारस–युगल के वर्णन से होता है। प्रातःकाल की बेला में महर्षि बाल्मीकि इसके द्रष्टा हैं तभी एक आखेटक द्वारा इस जोड़े में से एक की हत्या कर दी जाती है। जोड़े का दूसरा पक्षी इसके वियोग में प्राण दे देता है। ऋषि उस आखेटक को श्राप देते हैं। लाइनस के द्विपद नाम वर्गीकरण में इसे ग्रस एंटीगोन कहते हैं। वर्ग ग्रुइफॉर्मस का यह सदस्य श्वेताभ–सिलेटी रंग के परों से ढका होता है।

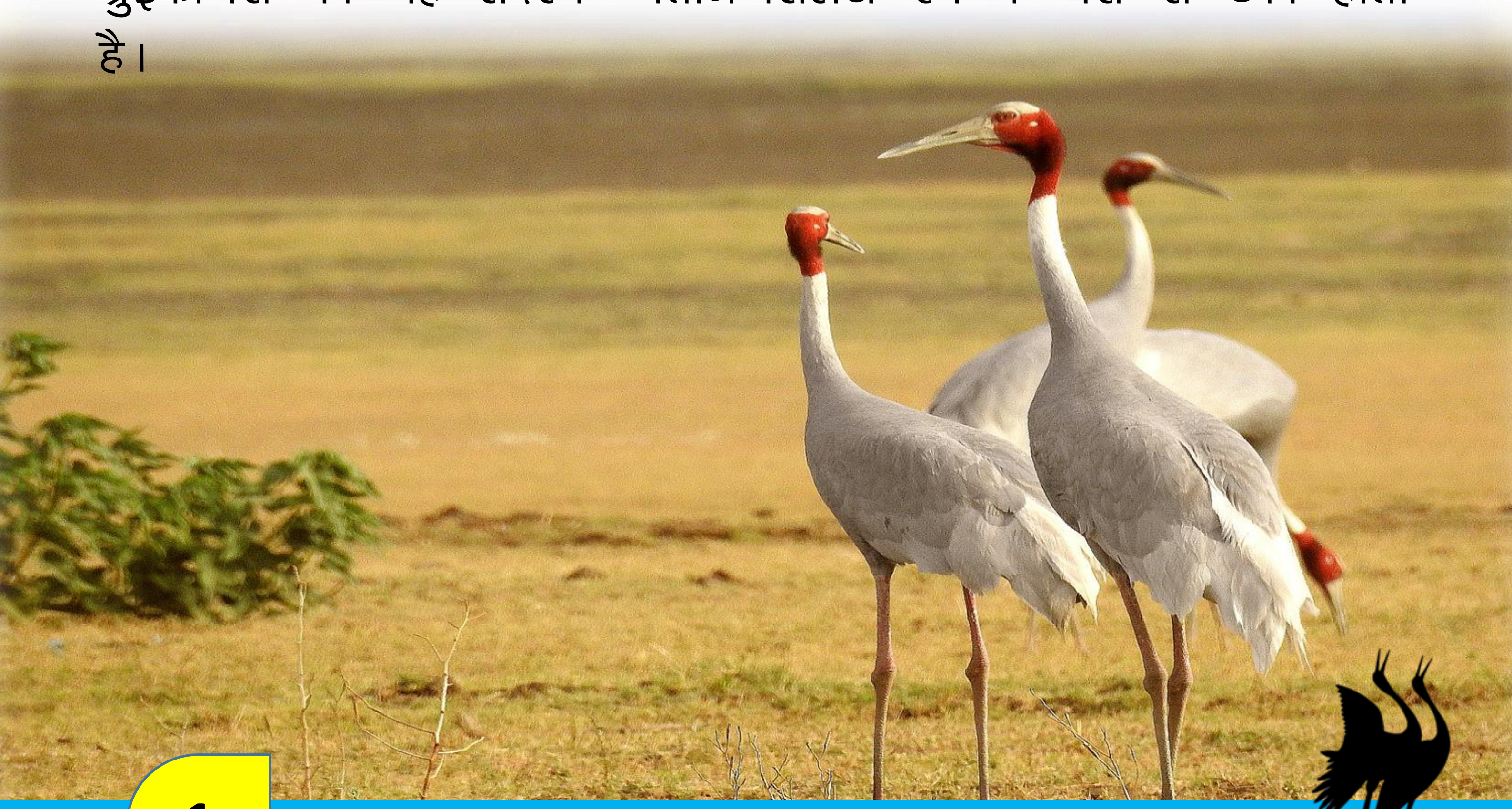

कलगी की त्वचा चिकनी हरीतिमा लिए हुए होती है। ऊपरी गर्दन और सिर के हिस्सों पर गहरे लाल रंग की थोड़ी खुरदरी त्वचा होती है। कानों के स्थान पर सिलेटी रंग के पर होते हैं। इनका औसत भार7.3 किलो ग्राम तक होता है। इनकी लंबाई 180से.मी (5.9फीट) तक हो सकती है। इनके पंखो का फैलाव 250से.मी (98.5फीट) तक होता है। अपने इस विराट व्यक्तित्व के कारण इसको धरती के सबसे बड़े उड़ने वाले पक्षी की संज्ञा दी गई है। नर और मादा में ऐसा कोई विशिष्ठ अंतर नहीं होता, लेकिन जोड़े में मादा को नर के अपेक्षाकृत छोटे शरीर के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है। पूरे विश्व में इसकी कुल आठ जातियाँ पाई जाती हैं। इनमें से चार भारत में पाई जाती हैं। पांचवी साइबेरियन क्रेन भारत में सन 2002 में ही विलुप्त हो गई। भारत में सारस पक्षियों की कुल संख्या लगभग 8,000 से 10,000 तक है। इनका वितरण भारत के उत्तरी, उत्तर-पूर्वी, उत्तर-पश्चिमी एवं पश्चिमी मैदानो में और नेपाल के कुछ तराई इलाको में है। विशेषतः गंगीय प्रदेशों के मैदानी भाग इनके प्रिय आवासीय क्षेत्र हैं।

इनके मुख्य निवास स्थान दलदली भूमि, बाढ़ वाले स्थान, तालाब, झील, परती जमीन और मुख्यतः धान के खेत इत्यादि हैं। ये मुख्यतः 2 से सैकड़ों तक की संख्या में रहते हैं। यह अपने घोसलें छिछले पानी के आस–पास में जहां हरे–भरे पौधों (मुख्यतः झाड़ियां और घास) की बहुतायत वाले स्थान पर बनाना पसंद करते हैं। यह मुख्यतः शाकाहारी होते हैं और कंद, बीजों और अनाज के दानों को ग्रहण करते हैं। कभी–कभी ये कुछ छोटे अकशेरुकी जीवों को भी खाते हैं। नर और मादा युगल एक दूसरे के प्रति पूर्णतः समर्पित होते हैं। एक बार जोड़ा बनाने के बाद ये जीवन भर साथ रहते हैं। अगर किसी दुर्घटना में किसी एक साथी की मृत्यु हो जाए तो दूसरा अकेले ही रहता है। मुख्यतः वर्षा ऋतु इनका प्रजनन काल है। इनके प्रणय का आरंभ नृत्य से होता है। नृत्य के आरंभ से पहले ये पक्षी अपनी चोंच को आसमान की ओर कर के विशेष तीव्र ध्वनियां निकालते हैं। इस प्रणय ध्वनि का आरंभ मादा करती है और नर की प्रत्येक अपेक्षाकृत लंबी ध्वनि के उत्तर में दो बार छोटी ध्वनियां निकालती हैं। ध्वनि के समय नर अपनी चोंच और गर्दन को आसमान की तरफ सीधा रखता है और पंखो को फैलाता है। मादा केवल गर्दन और चोंच को सीधा रखती है और ध्वनि निकालती है।

इनका प्रणय नृत्य आकर्षक होता है। ये इसे विभिन्न तरह से पंखो को फड़फड़ा कर, अपने स्थान पर कूद कर और थोड़ी दूरी तक गोलाई में दौड़ कर और छोटे घास एवं लकड़ियों को उछाल कर पूरा करते हैं। मादा एक बार में दो से तीन अंडे देती है। इन अंडो को नर और मादा बारी–बारी से सेते हैं। नर सारस मुख्यतः सुरक्षा की भूमिका अदा करता है। लगभग एक महीने के पश्चात उसमें से बच्चे बाहर आते हैं। बच्चों के बाहर आने के बाद माता–पिता 4से5 सप्ताह तक उनका पोषण नन्हें कोमल जड़ों, कीटों, सूंडियों और अनाज के दानो इत्यादि से करते हैं। इतने समय के बाद बच्चे अपने माता–पिता के जैसे अपना आहार स्वयं प्राप्त करना सीख लेते हैं। बच्चे लगभग दो महीनों में अपनी प्रथम उड़ान भरने के योग्य हो जाते हैं। नन्हे सारस का शरीर बहुत हल्की लालिमायुक्त भूरे मुलायम रोंएदार परों से ढ़ँका होता है जो लगभग एक वर्ष में श्वेताभ हो जाते हैं। सारस पक्षी का संपूर्ण जीवन काल 18 वर्षों तक हो सकता है। जब नर और मादा साथ साथ होते हैं तो मादा को इसके थोड़े से छोटे आकार के कारण आसानी से पहचाना जा सकता है। इस पक्षी को प्रेम और समर्पण का प्रतीक मानते हैं।

यह पक्षी अपने जीवन काल में मात्र एक बार जोड़ा बनाता है और जोड़ा बनाने के बाद सारस युगल पूरे जीवन भर साथ रहते हैं। यदि किसी कारण से एक साथी की मृत्यु हो जाती है तो दूसरा बहुत सुस्त होकर खाना पीना बंद कर देता है जिससे प्रायः उसकी भी मृत्यु हो जाती है। अपनी इस विशेषता के कारण इसे एक अच्छी सामाजिक स्थिति प्राप्त है।

वर्तमान काल में इस पक्षी के साथ दुखद बात जुड़ी हुई है। वैश्विक स्तर पर इसकी संख्या में हो रही कमी को देखते हुए इसे संकटग्रस्त प्रजाति घोषित किया गया है और इसकी वर्तमान सरंक्षण स्थिति को निरूपित किया गया है। इसका अर्थ यह है कि वैश्विक स्तर पर इस पक्षी की संख्या में तेजी से कमी आ रही है और अगर इसकी सुरक्षा के समुचित उपाय नहीं किए गए तो यह प्रजाति विलुप्त हो सकती है। यहां यह उल्लेखनीय है कि मलेशिया, फिलीपींस और थाइलैंड में सारस पक्षी की यह जाति पूरी तरह से विलुप्त हो चुकी है। भारत वर्ष में भी कथित रूप से विकसित स्थानों में से अधिकांश स्थानों पर सारस पक्षी विलुप्तप्राय हो चुके हैं।

कैसे हुई सारस संरक्षण की शुरुआत

सारस संरक्षण के वर्तमान परिदृश्य को समझने के लिए इसके प्रारंभिक प्रयासों व घटनाओं को जानना आवश्यक है। जिसकी शुरुआत बिशनखेड़ी ग्राम में एक घायल युवा सारस को बचाने से हुई। ग्राम निवासी श्री सुनील श्रीवास्तव ने इस सारस को बचाकर उसकी प्रारंभिक देखभाल कर इसकी सूचना भोपाल बर्ड्स संस्था के सदस्यों को दी जो अक्सर उनके खेत से गुजरकर तालाब में सारसों को देखने जाते थे। संस्था के सदस्यों द्वारा तुरंत ग्राम में जाकर पूरी वस्तुस्थिति को जाना व वन विभाग को सूचित किया। इस दौरान वह युवा सारस ग्राम में सभी के साथ हिल–मिल गया। वह उनके हाथों से सब्जियाँ, रोटी इत्यादि खाता था एवं वन विभाग द्वारा उसे रेसक्यू करने व सुरक्षित आवास में छोड़ने के बाद भी सारस ग्राम वासियों के लिए चर्चा का विषय रहे।

संस्था द्वारा इस घटना से प्रेरित होकर ग्रामवासियों से सारस के बारे में जानकारियाँ एकत्रित करना शुरू कर दिया जैसे सारसों के प्रति समुदाय की समझ, उनकी पूर्व व वर्तमान में संख्या, आवास एवं खतरे इत्यादि। इन सभी बातों की चर्चा श्री सुनील श्रीवास्तव के घर तथा गाँव की चौपाल पर की गई। ग्राम वासियों से चर्चा के बाद कुछ बिंदु उभर कर आये कि ग्रामवासी सारसों के बारे में अत्यंत सीमित जानकारी रखते हैं एवं उनके खतरों के प्रति अनभिज्ञ थे।

संस्था द्वारा ग्राम वासियों को सारसों के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाने का निर्णय लिया गया। इस कार्य में इनका सहयोग 'वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया' संस्था द्वारा किया गया।

अवयस्क सारस ग्रामीणों के घर के आस पास

सारस खेती करती महिला के साथ

भोपाल बर्ड्स के प्रतिनिधियों द्वारा अवयस्क सारस की सतत् निगरानी

डब्ल्यू.टी.आई संस्था के सहयोग से भोपाल बर्डस द्वारा भोज वेटलैंड के किनारे बसे दस ग्रामों गोरागाँव, बिशनखेड़ी, बरखेड़ा नाथू, बीलखेड़ा, मुगालिया छाप, ईंटखेड़ी छाप, बम्होरी, कजिलास, खमला खेड़ी,लखापुर में ग्रामवासियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाये गए, विभिन्न पत्र व पठन सामग्री वितरित की गई, ग्रामीणों को सारस के खतरों के प्रति जागरूक कर खतरों को कम करने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में ग्रामीण युवाओं के समूह 'सारस मित्र' का गठन किया गया। जिन्होंने वॉलेन्टीयर बन कर सारसों की सतत्त निगरानी की, अंडों व बच्चों की भी निगरानी की गई। यह सारस मित्र स्वयं या भोपाल बर्डस संस्था के सदस्यों के साथ मिलकर तालाब, ग्राम, खेत सभी स्थानों पर सारसों की निगरानी कर आंकड़े इकट्ठे करते थे व सारस एवं अन्य पक्षियों को नुकसान पहुंचाने वाले तत्वों से सुरक्षा करते थे। यूँ तो सारस मित्र युवाओं का समूह था परंतु इन ग्रामों के बच्चे, बूढ़े, महिलाएँ व कृषक भी सारस मित्रों की तरह बन गये वे रोज अपने दैनिक कार्यो के साथ–साथ सारसों की निगरानी करते व संस्था को सूचना देते। धीरे–धीरे सारस इन ग्रामों की संस्कृति में बस गये। वह निर्भय होकर ग्राम के खेतों में घूमते, जोड़े बनाते व अंडे देने लगे। ग्रामों के सुरक्षित वातावरण में इनकी संख्या में लगातार वृद्धि होने लगी। अब यह तालाब एवं तथा आस –पास के क्षेत्र में झुंडो में दिखाई देने लगे ।

वर्ष 2015 में सीमित संसाधनों के साथ सारस पक्षी पर ग्रामवासियों एवं भोपाल बड्र्स द्वारा लगातार निगरानी की गई एवं उनकी संख्या घटने के कारण ढूँढे गए ।

सारस संरक्षण में ग्रामवासियों द्वारा जैविक कृषि को अपनाना भी एक मील का पत्थर साबित हुआ। संस्था द्वारा जागरूकता कार्यक्रम के दौरान रासायनिक खाद व कीटनाशकों का फसलों पर प्रयोग से सारस पक्षियों पर घातक दुष्प्रभावों पर चर्चा की गई परंतु जैविक खाद पर विश्वास बनाना व नुकसान का भय हटाना आसान कार्य नहीं था। इस कार्य में डॉ.मनोज कुमार शर्मा, प्रभारी वैज्ञानिक, क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय की मुख्य भूमिका रही। डॉ.शर्मा द्वारा ग्रामीणों को रासायनिक खाद व कीटनाशकों के खतरों,प्रदूषण से हानि एवं जैविक खेती के लाभों को विस्तार पूर्वक समझाया गया। उनकी बातों को समझकर कुछ ग्रामीणों ने प्रयोगात्मक रूप से खेत के कुछ हिस्सों में जैविक खेती की जिसके परिणाम सार्थक मिलने पर कुछ अन्य कृषकों ने भी जैविक खेती को अपनाया। सारसों के प्रति इन सुरक्षात्मक उपाय के फलस्वरूप सारसों की संख्या अच्छी दिखाई देने लगी एवं उनके अंडे व बच्चों को भी चिन्हांकित किया गया। सारस के झुंड शहरी क्षेत्र के नागरिकों, विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं के आकर्षण के केंद्र बन गये। भोपाल तथा अन्य शहरों व राज्यों के लोग इन सारसों को देखने आने लगे। इन लोगों द्वारा सारसों के बारे में विस्तृत जानकारी देने लिए सारस मित्रों ने गाइड की भूमिका अदा की एवं साथ ही श्री सुनील श्रीवास्तव (कृषक) द्वारा तो अपने खेत में भोपाल बर्डस संस्था के सहयोग से सारस जैवविविधता केंद्र की स्थापना की गई जिसमें ग्रामीणों के साथ-साथ शहर के लोगों के लिए जागरूकता शिविर आयोजित किये गये।

ग्रामवासियों के के लिये सारस जागरूकता कार्यक्रम वर्ष 2014
ग्राम–गोरा गाँव

ग्रामवासियों के लिय सारस जागरूकता कार्यक्रम वर्ष 2020
ग्राम–बरखेड़ा नाथू

सारस जागरूकता केंद्र ग्राम बिशनखेड़ी
श्री सुनील श्रीवास्तव द्वारा स्वयं की कृषि भूमि पर निर्मित

सारस जागरूकता केंद्र ग्राम बरखेड़ा नाथू
श्री दौलत सिंह मेवाड़ा द्वारा स्वयं की कृषि भूमि पर निर्मित

इन जागरूकता शिविरों में ग्राम एवं शहर के नागरिकों द्वारा सारस संरक्षण हेतु विचारों का आदान–प्रदान व योजनाएँ बनाई जाती है। वर्ष दर वर्ष सारस मित्रों व सारस पक्षियों का समूह बढ़ता गया। सारस मित्रों एवं भोपाल बर्डस द्वारा चलायी गई जागरुकता की मशाल अब भोजताल के दूसरे ग्रामों में भी जलने लगी। बिशनखेड़ी के समीप के ग्राम नाथू बरखेड़ा में भी ग्राम के युवाओं ने सारस मित्र अभियान में भागीदारी की। ग्राम नाथू बरखेड़ा के कृषक श्री दौलत सिंह मेवाड़ा द्वारा भी अपनी कृषि भूमि में “सारस जैवविविधता केंद्र” भोपाल बर्डस संस्था के सहयोग से स्थापित किया गया । इस केंद्र द्वारा भी जनजागरूकता कार्यक्रम एवं ग्रामीण युवाओं को प्रकृति गाइड हेतु प्रशिक्षित किया जाने लगा। इस अभियान में समय–समय पर पक्षियों एवं विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों की मदद भी ली गई। भोजताल के समीप तथा शहर में स्थित विभिन्न स्कूल व कॉलेजों के नेचर क्लब के विद्यार्थियों द्वारा भी इन जागरूकता कार्यक्रमों में भागीदारी की गई। इन विद्यार्थियों द्वारा भी भोजताल में आने वाले विभिन्न पक्षियों की गणना, भोजताल की सफाई, वृक्षारोपण, एवं खरपतवार उन्मूलन, भोजताल की जैवविविधता अध्ययन आदि कार्यक्रमों में हिस्सा लिया गया। इन गतिविधियों द्वारा सारस के खतरों को कम करने में मदद मिली एवं आमजनों को भी प्रेरणा मिली। इन सभी गतिविधियों के परिणामस्वरूप सारस पक्षियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई एवं ग्रीष्म ऋतु में तालाब के पानी में सारसों के झुंड व उनके छोटे चूजों को देखा जा सकता है। कुछ जोड़े तो निर्भय होकर कृषकों के खेतों में प्रतिवर्ष घोंसले बनाते व अंडे देते हैं। वर्ष 2019 में तो इनकी अधिकतम संख्या 330 देखी गई।

वर्ष 2012 से 2021 तक 200 सारस चौपाल का आयोजन किया गया जिसमे लगभग 5,000 ग्रामीणों ने भाग लिया।

इन 10 वर्षों में सारस केंद्रों पर 200 से भी अधिक जैवविविधता संरक्षण जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन छात्र–छात्राओं, शोधकर्ताओं, शिक्षकों, कॉर्पोरेट ग्रुप्स एवं आम जन हेतु किया गया। इन कार्यक्रमों में पक्षी दर्शन, नेचर ट्रेल, भोज ताल स्वच्छता अभियान वृक्षारोपण प्रमुख हैं।

इन 10 वर्षों में सारस पक्षी की संख्या लगातार बढ़ती गई जो 2019 की गणना में यह 330 पाई गई। वर्ष 2021 में भी कई अवयस्क एवं बच्चों के साथ सारसों को देखा गया।

राष्ट्रीय -अंतरराष्ट्रीय पहचान

भोपाल बड्‌र्स संस्था द्वारा वन विभाग के सहयोग से इस कार्य को गाँधी नगर (गुजरात) में 17 से 22 फरवरी, 2020 तक आयोजित हुये कन्वेंशन ऑफ पार्टीज (COP-13) में 130 देशों के प्रतिनिधियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संरक्षण कार्य की सराहना की गई ।

कन्वेंशन ऑफ पार्टीज (COP-13) में सारस संरक्षण अभियान के बारे में डॉ. संगीता राजगीर (संस्थापक, भोपाल बड्‌र्स संस्था) द्वारा प्रस्तुति दी गई।

COP–13 में विभिन्न राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के साथ भोपाल बड्‌र्स संस्था के प्रतिनिधि

6. Sarus and other birds in Central and Western Indian landscape

The sarus crane (*Grus antigone antigone*) is the tallest flying bird in the world standing 152-156 cm tall with a wingspan of 240cm[9]. Listed as "vulnerable" in the International Union for Conservation of Nature (IUCN) Red List of Threatened Species, they are distributed in the lowlands, but mostly forage outside Protected areas, especially in agricultural areas and wetlands of India. Once seen in hundreds, population of this bird drastically declined in areas such as bhoj wetland in Madhya Pradesh. As per reports around 160 individuals were counted in 2001 which reduced to 24 in 2008. In 2013 Only ten individual is sighted .Bhopal birds conservation society, a registered society began a Rapid action program in collaboration with forest department and the Wild Life Trust of India in October 2013 to monitor the population and also take up further protection through active consultation with farmers and villagers . Several of the farmers have now come forward to practise organic farming and a group of from peripheral villages formed the "Sarus Mitra" to monitor the bird throughout the year. These volunteers keep a watch on sarus crane population , their nests and illegal poaching . As a result

बड़ा तालाब एरिये के ग्रामीण बन रहे सारस मित्र

[9] https://www.wwfindia.org/about_wwf/priority_species/threatened_species/sarus_crane/

12

of this program latest survey done during 2019 have now shown a remarkable recovery and the presence of 330 individual of Sarus Crane in the Bhoj Wetland .

Similarly, in Rajasthan, locally resident birds are threatened sometimes by local festivals such as the annual kite flying *Makar Sankranti* festival. Civil society organizations such as Hope and Beyond[10] and Raksha with support of the Forest Department work towards the welfare of the environment and all things living - give a new life to the birds injured during the ever-popular kite festival of Jaipur. It has also played a crucial role in rescue and rehabilitation of several of the avian botulism affected birds in Sambhar Lake and have now created awareness in the region to prevent any such outbreak in the near future.

सारस संरक्षण अभियान

भारतीय स्टेट बैंक के विशेष सहयोग से

Pre-release enclosure prepared at Ratan Talab (Fresh water Lake) & Post release monitoring was done for water birds

Birds were tagged with metal rings before releasing

[10] https://thelogicalindian.com/exclusive/birds-jaipur-kite-festival-19357

13

COP -13 की सेशन बुकलेट में प्रकाशित सारस संरक्षण अभियान की कहानी

COP-13 में मध्य प्रदेश के दल के सदस्य श्री जसबीर सिंह चौहान, प्रधान मुख्य वन संरक्षक,मध्य प्रदेश वन विभाग,श्री रजनीश सिंह,उप वन संरक्षक-वन्य प्राणी, मध्य प्रदेश वन विभाग एवं डॉ.संगीता राजगीर तथा मो. ख़ालिक़ (भोपाल बर्ड्स)

वर्ष 2016 में कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, लंदन की शोधकर्ता डॉ. ओडेसी डेविस ने भोज ताल में सारस संरक्षण को बर्ड लाइफ इंटरनेशनल के शोध कार्यक्रम के अंतर्गत विषय के रूप में लेकर भोज वेटलैंड क्षेत्र का दौरा कर सारस मित्रों के कार्य को देखा एवं सरहाना की। इस दौरे में वह कई ग्रामीणों एवं सारस मित्रों से मिलीं एवं उनके निवास पर रूककर अभियान को बारीकी से जानने की कोशिश की। इस कार्य के दौरान डॉ.राजू कसंबे (सहायक निदेशक ,बी.एन.एच.एस) भी उनके साथ थे।

यह हैं सारस संरक्षण के नायक (सारस मित्र)

श्री सुनील श्रीवास्तव
कृषक –ग्राम
बिशनखेड़ी

श्री भुवनेश बैरागी
छात्र –ग्राम
बरखेड़ा नाथू

श्री अंकित मालवीय
छात्र – ग्राम
बिशनखेड़ी

श्री मनीष प्रजापति
छात्र –ग्राम
बिशनखेड़ी

श्री रवि मेहरा
छात्र–ग्राम
बिशनखेड़ी

श्री पदम सिंह मेवाड़ा
सरपंच –ग्राम
ईंटखेड़ी छाप

श्री दौलत सिंह मेवाड़ा
कृषक
ग्राम–बरखेड़ा नाथू

श्री गोविन्द सिंह मेवाड़ा
कृषक
ग्राम–बरखेड़ा नाथू

श्री वीरेंदर सिंह मेवाड़ा
विद्यार्थी
ग्राम–बरखेड़ा नाथू

श्री मोहित चौकसे
शिक्षक
ग्राम –बीलखेड़ा

श्री ओमप्रकाश शर्मा
कृषक
ग्राम –बीलखेड़ा

यह वह सारस मित्र हैं जिन्होंने अपने गाँव का प्रतिनिधित्व करते हुए अन्य ग्रामवासियों को सारस मित्र बनने हेतु प्रेरित किया एवं सारस संरक्षण हेतु अभूतपूर्व कार्य किया।

सारस संरक्षण में शैक्षणिक संस्थाओं का योगदान

भोजवेटलैंड में सारस संरक्षण अभियान में विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जो निरंतर सारस संरक्षण हेतु विभिन्न गतिविधियों में सहयोग करते रहे हैं। इनमें व्ही.एन. एस नेचर सेवियर अग्रणीय रहा है। व्ही.एन.एस नेचर सेवियर (नेचर क्लब) द्वारा सारस संरक्षण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों जैसे पक्षी दर्शन,पक्षी गणना, भोजवेटलैंड की सफाई कार्यक्रम, विभिन्न जागरूकता शिविर इत्यादि में बढ़–चढ़ कर भाग लिया गया एवं स्वयं द्वारा भी समय–समय पर टाइगर डे, वर्ल्ड वेटलैंड डे, सीड बॉल मेकिंग, पर्यावरण पर आधारित विमेन्स डे आदि के आयोजन द्वारा भोजवेटलैंड व उसके आस–पास की जैवविविधता संरक्षण एवं उसके प्रति जागरूकता फैलाने में अभूतपूर्व योगदान रहा है। संस्थान द्वारा समय–समय पर विभिन्न स्कूल व कॉलेज के विद्यार्थियों हेतु भी पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम व भोजवैटलैंड में सारस संरक्षण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन हेतु सहयोग प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य शैक्षणिक संस्थानों जैसे संत हिरदाराम गर्ल्स कॉलेज, कॉरपोरेट ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, ईकोक्लब भोपाल इत्यादि का भी महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

व्ही एन एस नेचर सेवियर्स के सहयोग से आयोजित भोज वेटलैंड विंटर बर्ड कॉउंट कार्यक्रम का समूह चित्र

भविष्य की रणनीति

सारस संरक्षण के इस कार्य में कई चुनौतियाँ हैं जिनका सामना कर उन सभी कठिनाइयों को दूर करना आवश्यक है जिनसे सारस संरक्षण का कार्य अबाधित चलता रहे। इन सभी चुनौतियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है भोज वेटलैंड का प्रदूषण मुक्त एवं अतिक्रमण रहित होना। सर्वप्रथम भोज वेटलैंड के उन क्षेत्रों को चिन्हांकित कर संरक्षित व सुरक्षित करना आवश्यक है जो सारस के नीड़न व आवास की दृष्टि से संवेदनशील हैं एवं उन क्षेत्र में मानव गतिविधियाँ अनुशासित ढंग से हो सके जिससे सारस पक्षी की गतिविधियाँ बाधित ना हों चूँकि सारस अन्य पक्षियों की तरह स्वतंत्र जीव हैं एवं उनकी उपस्थिति भोजवेटलैंड के किसी भी क्षेत्र में हो सकती है अतः सारस संरक्षण के लिए उन सभी क्षेत्रों में जागरूकता फैलानी आवश्यक है जो भोजवेटलैंड के समीप बसे हैं।सारस संरक्षण के लिए कृषिभूमियों को ज्यादा से ज्यादा जैविक कृषि युक्त बनाना आवश्यक है ताकि सारसों के लिए कीटनाशक मुक्त आवास निर्मित हो सके साथ ही इन क्षेत्रों में सारसों की निगरानी व शिकार रोकने लिए अधिक सारस मित्रों की आवश्यकता है जिन्हें जागरूक एवं प्रशिक्षित होना चाहिए। इन क्षेत्रों में सारस संरक्षण समिति का गठन किया जाना चाहिए ताकि वे क्षेत्र विशेष के अनुसार सारस संरक्षण हेतु रणनीतियाँ बना सके। इन सभी कार्यों के साथ शहरी क्षेत्र के निवासियों, वैज्ञानिक, शोधकर्ता व संस्थाएँ चाहे व राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर के हों उनका सहयोग व सम्मिलित प्रयास किया जाना आवश्यक है जिससे भोजवेटलैंड में सारस संरक्षण का प्रयास और अधिक सफल हो सके।

सारस संरक्षण अभियान के कुछ यादगार पल

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री राम नाथ कोविंद द्वारा भोपाल प्रवास के दौरान सारस मित्र कार्यक्रम की जानकारी लेकर प्रशंसा की गई।

मध्य प्रदेश की पूर्व राज्यपाल एवं उत्तरप्रदेश की राज्यपाल महामहिम श्रीमती आनंदी बेन पटेल द्वारा सारस मित्र कार्यक्रम के जागरूकता पोस्टर का विमोचन किया गया।

मध्य प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री मंगू भाई पटेल को सारस मित्र कार्यक्रम के सफलतम 10 वर्ष पूर्ण होने पर स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

मध्य प्रदेश के वन मंत्री माननीय श्री कुंवर विजय शाह को सारस संरक्षण के सफलतम 10 वर्ष पूर्ण होने पर स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

श्री रमेश कुमार गुप्ता,भा.व.से,प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख वन विभाग, मध्य प्रदेश शासन को सारस संरक्षण के सफलतम 10 वर्ष पूर्ण होने पर स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

श्री आलोक कुमार,भा.व.से,प्रधान मुख्य वन संरक्षक,वन्य प्राणी वन विभाग, मध्य प्रदेश शासन को सारस संरक्षण के सफलतम 10 वर्ष पूर्ण होने पर स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय ,भोपाल के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ.मनोज कुमार शर्मा, डॉ.बिनिश रफत (वैज्ञानिक–सी), श्री मानिक लाल गुप्ता (वैज्ञानिक–बी) को सारस संरक्षण के सफलतम 10 वर्ष पूर्ण होने पर स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

सारस संरक्षण अभियान में महत्वपूर्ण योगदान देने हेतु वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया संस्था के श्री अमृत मेनन एवं श्री देबब्रोतो सरकार को स्मृति चिन्ह भेंट गया।

सारस संरक्षण अभियान में समय-समय पर मागदर्शन देने हेतु श्री शिव शेखर शुक्ला (प्रमुख सचिव पर्यटन एवं प्रबंध संचालक ,मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड) को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

दिनाँक 7 अक्टूबर 2021 को मध्य प्रदेश राज्य वेटलैंड प्राधिकरण द्वारा भोज ताल में सारस संरक्षण के लिए किये गए उत्कृष्ट कार्य हेतु भोपाल बर्ड्स संस्था से डॉ संगीता राजगीर, श्री मो खालिक एवं सारस मित्र श्री भुवनेश बैरागी (ग्राम–नाथू बरखेड़ा) तथा श्री अंकित मालवीय (ग्राम–बिशनखेड़ी) का सम्मान श्री अनिरुद्ध मुखर्जी (प्रमुख सचिव,पर्यावरण एवं महानिदेशक ,एप्को) एवं श्री श्रीमन शुक्ला (सदस्य सचिव,राज्य वेटलैंड प्राधिकरण)द्वारा किया गया।

सारस मित्र अभियान -ख़बरों में

2013 में 10 सारस बचे थे, ग्रामीणों की जागरूकता से सात साल में 350 हुए, अब देश भर में भोपाल की प्रशंसा

सारस मित्र बनकर की निगरानी, बायोडायवर्सिटी में है महत्वपूर्ण योगदान

वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया व भोपाल बर्ड्स ने शुरू किया था रेपिड एक्शन प्रोग्राम

● जागरण रिपोर्टर ●

कभी आप बिशनखेड़ी, नाथू बरखेड़ा गांव की ओर जाएंगे तो आपको विश्व का सबसे विशाल उड़ने वाला पक्षी सारस झुंड में देखने को मिलेगा। लेकिन साल 2013 में इन पक्षियों की संख्या भोपाल में सिर्फ 10 रह गई थी और ये दुर्लभता की कगार पर आ गए थे। भोपाल की बायोडायवर्सिटी के लिए यह बेहद चिंताजनक था। भोपाल में सारस पक्षियों की संख्या बढ़ाने और संरक्षण के लिए भोपाल बर्ड्स संस्था ने वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया के साथ मिलकर अक्टूबर 2013 से रेपिड एक्शन प्रोग्राम की शुरूआत कर दी। इस प्रोग्राम से ग्रामीणों को जोड़ा और उन्हें जागरूक किया। ग्रामीणों की जागरूकता व कार्य रंग लाए और 2019-20 की गणना में सारस की संख्या करीब 350 हो गई। सारस उत्तरप्रदेश का राज्य पक्षी है लेकिन वर्तमान में भोपाल में सारस की संख्या को देख सभी प्रभावित हैं। अब इस मामले में भोपाल सहित मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश के साथ मुकाबले में लगभग बराबरी पर है।

सारस जैव विविधता केंद्र के लिए कृषकों ने दी जगह

मो.खालिक ने बताया कि बिशनखेड़ी और नाथूबरखेड़ा में सारस के संरक्षण के लिए ग्रामीणों की सहायता से वर्ष 2019-20 में एक-एक सारस जैव विविधता केंद्र स्थापित किए गए। इन्हें बनाने के लिए ग्रामीणों ने ही अपने खेतों में जगह दी। यहां प्रशिक्षण कार्यक्रम, जागरूकता कार्यक्रम व कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिन्हें ग्रामीण स्वयं भी करते हैं।

सारस मित्रों ने अवैध शिकार व घोंसलों पर रखी नजर

भोपाल बर्ड्स के मो.खालिक ने बताया कि रेपिड एक्शन प्रोग्राम की शुरूआत गोरागांव व बिशनखेड़ी से हुई थी। इसके तहत हमने कई कोशिशें की। इसके तहत कृषकों के लिए कार्यशाला, 50 ग्रामीण युवाओं को सारस मित्र बनाया व कई जागरूकता कार्यशालाएं भी की। कृषकों ने सारस को बचाने व संख्या बढ़ाने के लिए जैविक खेती करना शुरू कर दी। वहीं युवा सारस मित्रों ने अवैध शिकार पर रोक, सारस की संख्या गिनना और घोंसलों की सुरक्षा करने में योगदान दिया।

सारस मित्र कार्यक्रम ने भोपाल को दिलाई अंतरराष्ट्रीय पहचान

सारस मित्र कार्यक्रम ने भोपाल को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई है। वर्ष 2020 में गुजरात में आयोजित जैवविविधता संरक्षण के विश्व के सबसे बड़े आयोजन सीओपी-13 में भोपाल बड्र्स संस्था तथा मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा भोज ताल में सारस संरक्षण पर प्रस्तुतीकरण हेतु आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में विश्व के 130 देशों ने भाग लिया था।

भोपाल एवं आस-पास सारस

इनकी बहुत बड़ी संख्या भोपाल के बड़े तालाब के साथ-साथ, हलाली जलाशय, रायसेन, दाहोद जलाशय, सिरपुर तालाब, इंदौर में भी देखने को मिलती है। इसके साथ-साथ कलियासोत, केरवा, अजनाल, घोडा पछाड़ एवं हताईखेड़ा जलाशय में भी एक दो जोड़े देखने को मिल जाते हैं।

सारस का महत्व

सारस पक्षी बायोडायवर्सिटी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह पक्षी खेतों में कीड़े, चूहे सहित नुकसान पहुंचाने वाली चीजों को खाता है। इसके अलावा पानी के कीट व जलीय जीवों को सारस खा लेता है, जिससे बायोडायवर्सिटी सिस्टम बैलेंस रहता है।

जैविक खेती कर, कीटनाशकों के कम उपयोग से बचेंगे पक्षी

● जागरण रिपोर्टर ●

भोपाल बड्र्स द्वारा सोमवार को वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया के सहयोग से ग्राम नाथूबरखेड़ा में सारस जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में गांव के युवाओं के साथ-साथ किसानों तथा प्रबुद्धजनों ने भाग लिया।

भोपाल बड्र्स ने आयोजित किया सारस जागरुकता कार्यक्रम

कार्यक्रम का आयोजन भोजताल के आसपास के गांव में सारस पक्षी के लिए जागरुकता फैलाने के लिए किया जा रहा है। कार्यक्रम में परियोजना के समन्वयक मो. खालिक ने भोज ताल के क्षेत्र में सारस पक्षियों के बारे में जानकारी दी। डॉ. संगीता राजगीर (पक्षी विशेषज्ञ) द्वारा सारस पक्षी के प्रकृति में महत्व व उन पर मंडरा रहे खतरों के बारे में अवगत कराया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. मनोज कुमार शर्मा (प्रभारी वैज्ञानिक- क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय) द्वारा सारस पक्षी को बचाने के उपाय सम्बन्धी जानकारी दी गई। उन्होंने बताया की किसान जैविक खेती कर के कीटनाशकों का उपयोग कम कर सकते हैं जिससे पक्षियों पर होने वाले दुष्प्रभाव को बहुत कम किया जा सकता है। कार्यक्रम में ग्राम प्रतिनिधि के रूप में दौलत सिंह मेवाड़ा उपस्थित रहे। सारस मित्रों में भुवनेश बैरागी, अंकित मालवीय, वीरेंद्र मेवाड़ा आदि ने भाग लिया।

संरक्षण ॥ सारस व पर्यावरण बचाने के लिए अपने खेत पर बनाया जैव विविधता केंद्र

बड़ा तालाब एरिये के ग्रामीण बन रहे सारस मित्र

ऋचा नेमा राय ॥ भोपाल

बड़ा तालाब एरिये के ग्रामीण पक्षी सारस के संरक्षण व इनकी संख्या बढ़ाने में बखूबी अपनी भूमिका निभा रहे हैं। ग्रामीण सारस मित्र बनकर उनके घोंसले व भोजन की व्यवस्था करते हैं। हाल ही में सारस के प्रति लोगों जागरूक व शिक्षित करने के लिए ग्राम नाथू बरखेड़ा के एक किसान ने अपने खेत पर नया सारस जैवविविधता केंद्र तैयार किया है। इस केंद्र के माध्यम से वे गांव के अन्य लोगों को जागरूक कर सारस मित्र बनाएंगे।

ग्राम नाथू बरखेड़ा के किसान दौलत सिंह मेवाड़ा ने बताया कि उन्होंने अपने खेत की जमीन पर ग्रामीण तरीके खपरैल व मिट्टी से जैव विविधता केंद्र तैयार किया है। सारस की संख्या बढ़ाने व उनके संरक्षण के लिए दौलत सिंह सारस मित्र बने हैं। इस केंद्र में अब वे गांव के अन्य लोगों को भी जोड़कर पर्यावरण व सारस संरक्षक के प्रति शिक्षा देकर जागरूकता कार्यक्रम चलाएंगे।

सारस की संख्या बढ़ाने में कार्यक्रम सफल

भोपाल बड्र्स संस्था के मोहम्मद खालिक ने बताया कि पिछले 10 सालों से सारस पक्षी को बचाने के लिए के कार्यक्रम चलाए गए हैं इनमें सारस मित्र कार्यक्रम सबसे सफल रहा है। यह कार्यक्रम भोज ताल के आसपास के ग्रामीणों के साथ मिलकर चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के संचालन में वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया, वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड फॉर नेचर, भारतीय स्टेट बैंक, इंडियन बर्ड कंजर्वेशन नेटवर्क, मध्य प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड आदि कई सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों की मदद संस्था को मिल चुकी है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत भोज ताल के आसपास के ग्रामीणों को सारस पक्षी के बारे में जागरूक करना एवं सारस मित्र बनाना, सारस पक्षी के आवास और प्रजनन क्षेत्रों को बचाना, ग्रामीणों को रासयनिक खेती से जैविक खेती की तरफ आकर्षित करना प्रमुख कार्य हैं। भोज ताल के अंतर्गत आने वाले गांव जैसे बिशनखेड़ी, गोरगाओं, मुगलिया छाप आदि सभी ग्रामीण सारस मित्र कार्यक्रम में भाग ले चुके हैं। भोपाल बड्र्स संस्था के प्रयासों से सारस पक्षियों की संख्या 08 (वर्ष -2007) से बढ़कर (202 वर्ष -2018) तक हो चुकी है।

भोपाल व आसपास के इन क्षेत्रों में देखने मिलते हैं सारस

भोपाल व आसपास के क्षेत्रों से सारस पक्षी की संख्या की जानकारी भोपाल बड्र्स संस्था के शोधकर्ता लगातार एकत्र करते रहते हैं। इनकी बहुत बड़ी संख्या भोपाल के बड़े तालाब के अलावा हलाली जलाशय, रायसेन, दाहोद जलाशय, सिरपुर तालाब, व इंदौर में भी देखने को मिलती है। इसके साथ ही कलियासोत, केरवा, अजनाल, घोडापछाड़ व हताईखेड़ा जलाशय में भी एक दो जोड़े देखने को मिल जाते हैं।

तालाबों के आसपास बनाते हैं घोंसला

सारस विश्व का सबसे विशाल उड़ने वाला पक्षी है। मोहब्बत के प्रतीक नर व मादा सारस एक-दूसरे के प्रति वफादार रहते हैं। एक बार जोड़ा बनाने के बाद यह पूरी जिंदगी हमेशा एक-दूसरे के साथ रहते हैं। किसी दुर्घटनावश किसी एक की मौत हो जाती है तो भी दूसरा साथी अकेला ही रहता है। सारस अपना घोंसला घनी वनस्पतियों से भरे उथले तालाबों के पास बनाते हैं। इनका घोंसला आसपास के दलदल से लाए जलीय पौधों से बना होता है।

विश्वभर में हैं आठ प्रजातियां

पूरे विश्व में इसकी कुल आठ प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से चार भारत में पाई जाती हैं। पांचवी साइबेरियन क्रेन भारत में से वर्ष 2002 में ही विलुप्त हो गई। भारत में सारस पक्षियों की कुल संख्या लगभग 8 हजार से 10 हजार तक है। इनका वितरण भारत के उत्तरी, उत्तर-पूर्वी, उत्तर-पश्चिमी एवं पश्चिमी मैदानो में और नेपाल के कुछ तराई इलाकों में है। विशेषतः गंगीय प्रदेशों के मैदानी भाग इनके प्रिय आवासीय क्षेत्र होते हैं।

सच मीडिया पब्लिकेशन प्रा.लि. के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं सम्पादक सिकंदर अहमद द्वारा मेसर्स पी.जी. इन्फ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विस प्रा. लि. करोंद भानपुर बाइपास रोड, भोपाल-46 2 37

इंटरनेशनल सेमिनार में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करेगी 'भोपाल बड्र्स'

भोपाल। सारस दुनिया के सबसे बड़े फ्लाइंग बर्ड हैं। साथ ही सबसे संकटग्रस्त प्रजाति भी। इसे बचाने के लिए दुनियाभर के वैज्ञानिक, पक्षी विशेषज्ञ, रिसर्चर्स और संस्थाएं काम कर रही हैं। इसी कड़ी में इटावा (उत्तरप्रदेश) में एक से चार फरवरी तक अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जाएगा। मध्यप्रदेश में सारस की स्थिति और उसके संरक्षण के प्रयासों की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए शहर की भोपाल बड्र्स संस्था को आमंत्रित किया गया है। बर्ड एक्सपर्ट मोहम्मद खालिक और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी की एमपी को-ऑर्डिनेटर डॉ. संगीता राजगीर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगी।

130 देशों के प्रतिनिधियों के बीच साझा हुई राजधानी की सारस संरक्षण यात्रा

सच प्रतिनिधि ॥ भोपाल

भोपाल से शुरू हुई सारस संरक्षण की यात्रा को विश्व के सबसे बड़े आयोजन कन्वेंशन ऑफ पार्टीज फॉर माइग्रेटरी स्पीसीज-13 (कोप) में जगह मिली है। इस आयोजन के माध्यम से दुनिया के 130 देशों तक इस यात्रा की कहानी पहुंची है, भोपाल के भोज वेटलैंड पर बचे 10 सारस पक्षियों के संरक्षण के साथ इस यात्रा को शुरू किया गया था। अब इस पहल के आधार पर देशभर के अन्य राज्यों में भी संरक्षण की नीति बनेगी। यह आयोजन 17 से 22 फरवरी तक अहमदाबाद में चल रहा है। इस आयोजन के माध्यम से दुनिया के 130 देशों तक इस यात्रा की कहानी पहुंची है, जिसका प्रस्तुतिकरण भोपाल बड्र्स संस्था की पक्षी विशेषज्ञ डॉ. संगीता राजगीर द्वारा किया गया। वहीं कोप-13 की बुकलेट में भी इस पहल (शेष पेज 13 पर)

कोप-13 की अंतर्राष्ट्रीय बुकलेट में दैनिक सच एक्सप्रेस में कुछ दिन पहले प्रकाशित खबर को भी स्थान दिया गया है। दैनिक सच एक्सप्रेस ने 'बड़ा तालाब के आसपास के ग्रामीण बन रहे हैं सारस मित्र' शीर्षक से समाचार प्रकाशित किया था। उक्त समाचार के प्रकाशन के बाद प्रशासन ने ग्रामीणों को सारस के संरक्षण के लिए प्रोत्साहित किया था।

अहमदाबाद में आयोजित किए गए इस आयोजन का उद्देश्य प्रवासी पक्षियों व जीवों पर किए जा रहे संरक्षण पर नीति-निर्धारण करना है। अलग-अलग देशों के प्रतिनिधियों द्वारा दिए गए प्रस्तुतिकरण को अन्य राज्यों में भी लागू करने पर निति तैयार होगी।

डॉ. संगीता राजगीर पक्षी विशेषज्ञ

यात्रा में इनका रहा सहयोग

सारस संरक्षण अभियान की यात्रा में मप्र वन विभाग, वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया, , मध्यप्रदेश जैवविविधता बोर्ड, डब्ल्यूडब्ल्यू एफ, क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, व्हीएनएस नेचर सेवियर्स का सहयोग रहा। भोज वेटलैंड के आसपास के हजारों सारस मित्रों ने अपने जीवन का अमूल्य समय देकर सारस का संरक्षण किया है, जो अद्भुत है।

330 sarus cranes in city now; no. rises by 8-fold

Shuchita Jha@timesgroup.com

BIRDS OF A FEATHER: File photo of sarus cranes at Upper Lake

Bhopal: With help of community participation, the falling population of sarus cranes has been restored in Bhopal to a whopping 330 in 2019 from just four in 2004. That is a staggering 82-time increase in their numbers in the last 15 years.

EFFORTS PAY OFF

The cranes had been dying due to lack of food and use of excessive pesticides in crops by villagers. However, with help of locals of Bishankhedi and Berkhedanathu, members of Bhopal Birds, an NGO working to restore diversity in Bhopal wetlands, were able to start a conversation with people and educate them, leading to the drastic increase in the population of the sarus cranes.

Mohammad Khaliq of Bhopal Birds said, "As per our data, there are 330 sarus cranes in the Bhoj wetlands now. Their count was 140 last year, which has more than doubled in 2019. This is a very positive sign."

Speaking about the awareness programme undertaken by the NGO and locals, Khaliq said, "In 2008, we found a dead sarus crane in Bishankhedi which became the centre of conversation there. That was the time we started discussing the importance of birds and conserving them in the cities. Slowly we developed Sarus Biodiversity and Education Centres in two places on the outskirts of Bhopal where villagers discuss about protecting the sarus crane."

He added that as awareness grew, practices such as using too much pesticides for crops and excessive fishing in nearby water bodies started decreasing. "The sarus cranes started getting more food and started laying their eggs in fields. Now when the villagers see the eggs of the birds, they do not disturb them, unlike earlier. It has been a remarkable achievement for Bhopal in the last 15 years," Khaliq said.

संगीता राजगीर | कीटनाशक मुक्त खेती करवाकर लाईं बदलाव

8 साल की मेहनत से बनवाया प्रदेश का पहला सारस जैव विविधता केंद्र

सारसों का सहारा
संगीता राजगीर जैव-विविधता विशेषज्ञ हैं। इनके प्रयास से ही अब बिसनखेड़ी में सारसों के 60-70 जोड़े आते हैं।

सन् 2008 में मैंने टीम के साथ बड़े तालाब के पास बिसनखेड़ी गांव का दौरा किया। बुजुर्गों से सभाएं करवाई, जिन्होंने बताया कि उनके जमाने में बहुत सारे सारस आते थे और आज सिर्फ 3-4 ही नजर आते हैं। कृषि वैज्ञानिकों की मदद से गांववालों को बिना कीटनाशक की खेती के फायदे बताए। इसी का नतीजा है कि आज यहां 60 से ज्यादा जोड़े आते हैं। गांववालों ने मिलकर बिसनखेड़ी में पहला सारस जैव-विविधता केंद्र शुरू किया है, ताकि यहां पर्यटक भी आ सकें।

Call us on 0755- 4049923
Message at 8839599038
onih6701@gmail.com
हरिभूमि 16 17

किसानों ने निजी भूमि पर बनाया सारस जैवविविधता जागरूकता केंद्र

कहीं से नहीं ली किसी तरह की फंडिंग ग्राम नाथू बरखेड़ा में बनाया केंद्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

अच्छी खबर

सारस पक्षी की जनसंख्या बढ़ाने और इसके प्रति लोगों को जागरूक करने भोपाल बड्र्स संस्था ने करीब 10 साल पहले बड़े तालाब के आसपास सारस मित्र बनाने की पहल शुरू की थी, जिसमें तालाब के किनारे आने वाले गांव के 500-600 किसानों व उनके बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। ग्राम नाथू बरखेड़ा के कुछ किसान, जो सारस मित्र हैं, ने अपनी निजी भूमि पर जैवविविधता जागररूता केंद्र बनाया है। इसके लिए उन्होंने कहीं से भी किसी तरह की फंडिंग नहीं ली है।

मिट्टी और खपरैल से बनाया केंद्र

भोपाल बड्र्स के मो. खालिक ने बताया कि यह जैवविविधता केंद्र एक तरह का स्ट्रक्चर है, जिसे मिट्टी और खपरैल से बनाया गया है। यह खेत के बीचों-बीच बनाया गया है। यहां वर्कशॉप व सेमिनार आयोजित कर सारस और जैव-विविधता के बारे में आसपास के ग्रामीणों, स्कूल-कॉलेज के बच्चों को जागरूक किया जाएगा। यहां से सारस और अपर लेक भी दिखाई देते हैं।

खेती के बारे में मिलेगी जानकारी

मो. खालिक ने बताया कि इस केंद्र में न सिर्फ सारस के बारे में, बल्कि उस क्षेत्र की खेती के बारे में भी जानकारी उपलब्ध होगी। सारस मित्र किसान बताएंगे कि बायो फर्टिलाइजर से कैसे खेती कर रहे, किस तरह के बीजों का उपयोग कर रहे हैं इत्यादि। इसके अलावा सारस क्या खाते हैं और खेतों का सारस किस तरह उपयोग करते हैं, इस बारे में भी जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी।

निगरानी होगी कि शिकार तो नहीं हो रहा

सारस की जनसंख्या में कमी का कारण इनका शिकार होना भी है। इस जैवविविधता केंद्र से यह निगरानी की जाएगी कि शिकार तो नहीं हो रहा है। वहीं इनकी जनसंख्या के बारे में भी जानकारी एकत्र की जाएगी कि कितने सारस बढ़ गए हैं और कितने कम हुए हैं, किस क्षेत्र में [illegible] हैं और किस क्षेत्र में [illegible]

---

iam BHOPAL
पीपुल्स समाचार | भोपाल, मंगलवार 24 मई 2016
movies • fashion • trends • lifestyle • what's in store • art • theatre • food • gossip • parties
07

सारस से झीलें हुईं खूबसूरत

दुनिया का सबसे ऊंचा और सबसे लंबी दूरी तक उड़ने वाला पक्षी है सारस, जिसका शरीर 156 सेमी तक लंबा होता है। आज से 10 वर्ष पहले झीलों के शहर भोपाल में सारस की बहुत कम संख्या या कहें 1 या 2 ही जोड़े दिखाई देते थे। लेकिन अब यह संख्या बढ़कर 100-150 तक हो गई है। शहर व आसपास की झीलों में अब बढ़ी संख्या में सारस देखे जा सकते हैं।

यंग रिपोर्टर • भोपाल
editor@peoplessamachar.co.in

दरअसल राजधानी में पक्षियों के लिए काम करने वाली संस्था भोपाल बड्र्स व भोपाल बड्र्स के साथ डब्ल्यूडब्ल्यूएफ और डब्ल्यूटीआई (वाइल्ड लाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया) के संयुक्त प्रयास से चलाए जाने वाले जागरुकता शिविरों से यह संख्या बढ़ी है। इस प्रयास में शहर व शहर के आसपास बसे गांव के लोगों का भी बहुत योगदान रहा है।

सारस मित्र बनाकर किया प्रयास

भोपाल बड्र्स के सदस्यों ने इस प्रयास की जानकारी देते हुए बताया कि हमने गांव-गांव में जागरुकता शिविरों के दौरान गांव के लोगों को ही सारस मित्र बनाया। जिनमें कृषक, मछुआरे व अन्य शामिल थे। इनका काम यह था कि ये शिकारियों व अन्य लोगों के आने-जाने की जानकारी हमे देते थे। इसके अलावा अंडों व बच्चों की मॉनीटरिंग भी इन्हीं के द्वारा की जाती थी।

यहां देखे जा सकते है सारस

अब सारस राजधानी व राजधानी के आसपास की झीलों के किनारे आसानी से देखे जा सकते हैं। जिसमें मुख्य तौर पर बड़ा तालाब, हलाली डेम, दाहोद डेम, केरवा डेम और बिलखिरिया में सारस की संख्या देखी जा सकती है। इन स्थानों पर वयस्क सारस के साथ-साथ बच्चे भी देखे जा सकते हैं।

2 सालों से देखने मिल रही ज्यादा संख्या

गौरतलब होगा कि सारस 2013-2014 तक 1 या 2 के जोड़े में ही दिखाई देते थे। लेकिन पिछले 2 सालों से ज्यादा संख्या देखने मिल रही है। यहां पर वयस्क सारस की तादाद बढ़ने से भविष्य में इनका प्रजनन बढ़ने के बेहतर चांस हैं। इस तरह की संख्या देख कर लगता है कि सारस ने राजधानी के आसपास के क्षेत्रों में ही नेस्टिंग की है। इससे हर साल यह तादाद बढ़ती जाएगी।

खतरे में है जल मुर्गी

कॉमन मोरेन या जल मुर्गी बड़े तालाब के आसपास बड़ी तादाद में पाई जाती थी लेकिन शिकार के कारण इसकी संख्या में भारी गिरावट आ रही है। ऐसा माना जाता है इसका गोश्त गर्म होता है इसलिए ठंड के दिनों में इसका शिकार बढ़ जाता है। बचाव के प्रयासों से सारस के साथ-साथ जल मुर्गी की मात्रा में भी बढ़ोत्री हुई है।

भोपाल व भोपाल के आसपास के इलाकों में सारस आसानी से दिख रहे है। इसमें यहां के लोकल लोगों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। लोग जागरूक हुए इसलिए सारस की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है।

-मो. खालिक, संचालक-भोपाल बड्र्स संस्था

कुछ समय पहले भोपाल की वेटलैंड भूमि कम होती जा रही थी, जिससे माइग्रेटरी बर्ड की संख्या भी कम हो रही थी। लेकिन कुछ समय से इन बड्र्स के अंडे व बच्चे दिखने लगे हैं, यह भोपाल के लिए अच्छी खबर है।

-संगीता राजगीर, संचालक-भोपाल बड्र्स संस्था

सहयोगी संस्थाएँ

Wildlife Trust of India
www.wti.org.in

nmnh

मप्र वन विभाग

VNS Nature Saviours

SBI